International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-11, Issue-2 March-April-2024 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

# शरद जोशी की रचनाओं के माध्यम से एक : सामाजिक विवेचन

**सतीश यादव**
**शोधार्थी (हिन्दी विभाग) महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली।**

**डॉ0 राजेश कुमार**
**शोध निर्देशक (हिन्दी विभाग)**
**राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर, उ0प्र0**

शरद जोशी व्यंग्य–हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण लेखक के रूप में प्रसिद्ध है। उन्होंने अपने समय के समाज की दशाओं और विसंगतियों को प्रदर्शित करने के लिए व्यंग्य रूपी हथियार का सहारा लिया है। मनुष्य, परिवार, समाज और राष्ट्र की सभी असमानताओं और विसंगतियों को प्रस्तुत करने के लिए शरद जोशी अपनी रचनाओं में व्यंग्य का भरपूर मात्रा में प्रयोग करते है। व्यंग्य शब्द एक ऐसा शब्द है जो मनुष्य के जीवन में सभी रूपों में दिखाई पड़ता है और इसी व्यंग्य के माध्यम से शरद जोशी जी एक साहित्यकार के रूप में सामाजिक–पर्यावरण का अवलोकन करके उन्हें अपने व्यंग्य–साहित्य के माध्यम से शुद्ध करने का प्रयास करते है। शरद जोशी जी अपने इस सामाजिक कार्य को अपनी समस्त रचनाओं के माध्यम से बड़े ही सहज भाव के साथ व्यंग्य को सुन्दर रचनात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। एक साहित्यिक लेखक का संसार उसकी रचना और उनमें प्रयोग किये गये शब्द–भण्डार होते है जिनके माध्यम से वह समाज की गतिविधियों में विद्धवान बुराईयों को आईना दिखाता है।

आजादी के बाद देश की बिगड़ी हुई सामाजिक और राजनीतिक विद्रुयताओं और एक–दूसरे के प्रति तेजी से बढ़ती हुई विसंगतियों पर तीखे और मार्मिक प्रहार किये है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश की जो सामाजिक दशा थी वह अत्यन्त दयनीय थी जो विभिन्न प्रकार की विसंगतियों से भरा हुआ था और समाज की दशा व दिशा को परिवर्तित करने के लिए जो विभिन्न आयामों की खोज हुई इन सब पर शरद जोशी जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से उस पर तीखे और मार्मिक प्रहार किये है।

शरद जोशी की भाषा अत्यंत सरल और सहज है। मुहावरों और हास–परिहास का हलका स्पर्श देकर इन्होंने अपनी रचनाओं को अधिक रोचक बनाया है, धर्म, अध्यात्म, राजनीति, सामाजिक जीवन, व्यक्तिगत आचरण कुछ भी शरद जोशी की पैनी नजर से बच नहीं सका है। इन्होंने अपनी व्यंग्य–रचनाओं में समाज में पाई जाने वाली सभी विसंगतियों का बेबाक चित्रण किया है। जोशी जी का एक नाटक है **''अंधो का हाथी''** जिसके माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि लोग कैसे–कैसे अपने समाज

की परिकल्पना में देश की सामाजिक विचारधारा को परे रख देते हैं। यह नाटक आपको हँसाएगा, गुदगुदाएगा और व्यंग्य बाणों से भेदता भी जायेगा, इसमें कुछ अंधो को मंच पर सूत्रधार इसलिए लाता है कि वह हाथी को परखे, समझे और इसके लाभ या हानि के बारे में विश्लेषण करे। लेकिन यह लोग अपेन विवके का परिचय न देकर आलसी, निष्क्रिय, शासकीय कर्मचारी और षड्यंत्रकारी राजनेताओं की भूमिका में उजागर होते है।

जिज्ञासु से शुरू होती यह नाटक–यात्राा षड्यंत्र और हत्या तक पहुँचाती है। सूत्रधार एक आम जनता, एक राष्ट्र हितैसी का किरदार निभाता है। जो समस्या पर प्रश्न लगा रहा है। समस्या को हाथी के रूप में अंधो के आगे खड़ी कर दी जाती है लेकिन समितियाँ, संगठन, सरकारी दफ्तरों की फाइलों की अदला–बदली और अन्य क्रियाकलाय के साथ कागजी कार्यवाही पर ही अटकी रहती है। लेकिन सूत्रधार जनता की आवाज बनकर देश के सूत्रधारों को समस्या पर ध्यान आकर्षित कराता है।

ये अंधे हाथी की पीठ को दीवार, पैर को खंभा, सूड़ को अजगर, पूँछ को रस्सी, कान को सूप की तरह मानकर दीवारवादी, खंभावादी, अजगरवादी, सूपपंथी, रस्सी पंथी संगठन का चरित्र निभाते और समस्या को अपने–अपने नजरियों से देख समझकर उसका निदान करते हुए स्वयं को सही बताने की होड़ लग जाती है। इसी आधार पर आज का हमारा सामाजिक परिवेश बना हुआ है जिसमें लोग अपने अनेक फायदों के लिए समाज को बदनाम करने पर लगे हुए है। जोशी जी ने अपने इस नाटक रचना के द्वारा लोगों को आईना दिखाने का काम करते है कि अपने–अपने अनुसार समाज की परिकल्पना करने में हम लोकतंत्र का गला घोट रहे हैं। बल्कि हमें इस प्रकार से सामाजिक पर्यावरण का निर्माण करना है कि जिसमें किसी प्रकार की जोर–जबरदस्ती न हो और सब की बातों को ध्यान से सुन व समझकर एक विचारधारा पर निर्णय लेना चाहिए।

सामाजिक विषमता मनुष्य जाति के लिए घोर अभिशाप से कम नहीं है। समाज के शोषित वर्ग का चित्रण शरद जोशी जी ने अपनी रचनाओं में बड़े ही सुन्दर ढंग से किया है। आज के समय में समाज में दो वर्ग दिखाई देता है एक लूटने वाला और दूसरा लुटने वाला, समाज में जो भी नैतिक और आदर्शपूर्ण मूल्यों की स्थापना हो रही है वह आज के समय में सब व्यर्थ है। इस यथार्थ को जोशी जी ने कुछ इस तरह से प्रस्तुत किया है–यानी हाल वही है जो सौ साल पूर्व था, होटलो का सड़ा खाना, गरीबी के हाल बयान करते गाँव से माँ के अनसुने पहलू, छोटे भाई को पैसे के लिए उन्हें कतार दृष्टि से देखना सब कुछ वैसा ही है। शरद जोशी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक विषमता का जो चित्र प्रस्तुत किया है

वह प्रचलित व्यवस्था के प्रति आक्रोशपूर्ण होते हुए भी व्यंग्य रूप में है और निम्न तथा शोषित वर्ग के लिए उसमें सहानुभूमि का भाव हिलोरे मार रहा है। आज के युग में सबसे जटिल समस्या है बेरोजगारी और बेकारी की आज का युवा वर्ग साक्षर और शिक्षित होते हुए भी बेरोजगार है। अपने परिवार और खुद के जीविकापार्जन के लिए इधर–उधर बेकारी के धक्के खा रहा है।

इस वास्तविकता को शरद जोशी ने अपनी रचना **''सरकार का जादू''** में बड़े ही सुन्दर रूपक के माध्यम से प्रस्तुत किया है। एक व्यक्ति आवेदन पत्र लेकर आता है पहले तो प्रार्थी को कोई जवाब नहीं मिलता, दूसरी बार लिखने पर भी रिजेक्ट कर दिया जाता है। पर तीसरी बार जब आवेदन पत्रों के साथ नोट नत्थी किये जाते है तब नोट गायब होकर आवेदन पत्र सेक्शन हो जाता है। शरद जोशी जी इस रचना के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास करते है कि इंडिया गवरमेंट में गरीब का एप्लीकेशन रिजेक्ट नहीं होगा तो और क्या होगा, जोशी एक ऐसे रचनाकार है जिन्होंने समाज की वास्तविकता को बड़े ही सच्चे ढंग से प्रस्तुत किया है। समाज की अनेक विसंगतियों का विवेचन अपनी रचना में व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। भारत का जो भी सामाजिक परिवेश लगातार भ्रष्ट होता गया इसके जिम्मेदार लोगों को जोशी जी ने अपने रचना संसार के माध्यम से कटघरे में खड़ा कर दिया है।

सामाजिक परिवर्तन एक सामान्य अवधारणा है जिसका प्रयोग किसी भी परिवर्तन के लिए किया जा सकता है जोशी जी ने अपने अनेक रचनाओं के माध्यम से जो सामाजिक परिवर्तन लाने का प्रयास किये है वह अत्यंत ही सारगार्भित है। सामाजिक विकास के अन्तर्गत उन समाजों का भी अध्ययन किया जाता है जो परम्परागत स्तर से औद्योगिक विकास के स्तर की ओर उन्मुख है। इस स्तर पर मात्र आर्थिक–प्रौद्योगिक परिवर्तन ही नहीं होते अपितु सामाजिक तथा राजनीतिक परिवर्तन भी होते है। **ई.हेगन** में लिखा है–

**''आर्थिक आधुनिकीकरण की प्रक्रिया किसी समाज को परम्परागत स्तर की अर्थव्यवस्था से औद्योगिकृत आर्थिक विकास के स्तर में पहुँचाने का संक्रमण है। यह संक्रमण धीरे–धीरे होता है और इसमें प्रौद्योगिकीय आर्थिक परिवर्तन के अतिरिक्त भी परिवर्तन सम्मिलित होता है।''**

समाजिक परिवर्तन आधुनिकीकरण प्रक्रिया का उतना ही महत्वपूर्ण अंग है जितना कि आर्थिक परिवर्तन, सांस्कृतिक संचय, शिक्षा आदि परिवर्तन के स्त्रोत है। मूल्य, प्रौद्योगिकी, सामाजिक आन्दोलन और महान लोग सभी सामाजिक परिवर्तन के कारक है। अतः यह वक्तव्य स्पष्ट करता है कि औद्योगीकरण और

आर्थिक विकास दोनों ही सामाजिक विकास के लिए आवश्यक है। जोशी जी अपने व्यंग्य रचनाओं के माध्यय से जैसे–

1– जीप पर सवार इल्लियाँ

2– हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे

3– दो व्यंग्य नाटक

4– यथासंभव

5– शरद परिक्रमा

6– सरकार का जादू

आदि के माध्यम से भारतीय समाज की जो रूप रेखा दिखाने का प्रयास किये है उसमें हर क्षण सामाजिकता का उल्लेख किसी न किसी माध्यम से दिखता रहता है और जोशी जी ने अपने व्यंग्य भरे वाणी व शब्दों से लोगों को हँसाने का भी काम किये है।

शरद जोशी की रचनाओं का विवेचन करने पर यह प्रत्यक्ष हो जाता है कि उन्होंने अपनी रचनाओं में समकालीन भारतीय समाज की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और प्रशासनिक सभी क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों और विद्रूपताओं का खुला विरोध किया है, उनके लेखन में समसायायिक समस्त–परिस्थितियों एवं विषयों का दस्तावेज उपलब्ध हो जाता है। रचनाकार ने अपनी रचनाओं के माध्यम से न केवल अपने अंदर की रचनाशीलता को प्रस्तुत किया है अपितु अपनी रचनाओं में भी समाज के अन्दर व्याप्त समसामायिक घटनाओं का उल्लेख भी बहुत ही सहज और सधी हुई भाषा में व्यक्त किया है। किसी भी साहित्यकार के साहित्य की उपयोगिता इस बात में निहित होती है कि वह व्यक्ति विशेष के लिए न होकर आम जनता का कथनीय प्रारूपण हो। इस तथ्य के निर्धारण में जोशी जी का रचना संसार कसौटी पर खरा उतरता है। जोशी जी ने भारतीय राजनीति की योजनाओं और घटनाओं को बड़े ही सधे और सरल शब्दों में व्यंग्य के माध्यम से व्यक्त किया है और साहित्य में व्यंग्य विधा को एक नयी दिशा प्रदान की है। उनके साहित्य की रचनात्मक विशेषता यह कि वह कटु व आक्रामक न होकर मीठा और तथ्यपूर्ण है जो कि सामान्य चित्त के पाठक को भी समझ आ जाता है।

शरद जोशी ने जो भी लिखा है वह दुरूह न होकर सरल और प्रवाहमय है। अपनी सरल अभिव्यक्ति, शैली, छोटी–छोटी वाक्य रचना, मुहावरेदार और अभिप्रायुक्त भाषा और मोहक शैली से रचनाकार पाठक को आत्मबद्ध कर लेता है। सामाजिक महत्व का शायद ही कोई ऐसा विषय होगा जिसके विसंगत और वैषम्यपूर्ण पक्ष पर उन्होंने प्रहार न किया हो। इस सम्बन्ध में प्रभात जोशी ने लिखा है–

**"वे व्यंग्य में अभिव्यक्त होकर ही जी सकते थे, इसलिए उनका लिखना साँस लेने की तरह सहज–स्वाभाविक और निष्प्राण था। रोज लिखकर जैसे वे अपने होने और बने रहने के अधिकार को पुर्नप्राप्त करते थै, शरद जोशी लिखने की सधुक्कड़ी पर जीते थे।"**

रचनाकार समाज के एक सदस्य के रूप में जो भी ज्ञान और अनुभव प्राप्त करता है उन्हें वह अपनी कल्पना और अनुभूतियों के माध्यम से एकत्र कर एक रचना के रूप में संयुक्त करके साहित्यिक रूपों में प्रस्तुत करने के लिए प्रतिबद्ध रहता है।

## v/;;u dk mís';

शरद जोशी जी तत्कालीन युग की परिस्थितियों से जूझते है। जीवन के आरम्भ से ही शरद जोशी पर संकटपूर्ण संघर्ष की परिस्थितियाँ छाई रही। उम्र केहर पड़ाव पर वह संघर्ष करते रहे। उनकी पूरी जिन्दगी संघर्ष मय रही है। उनके समक्ष बाल्यकाल से लेकर जीवन के अंत तक चुनौतियाँ खड़ी रही वे समाज से संघर्ष करके विजातीय शादी करने और सरकारी नौकरी करने तक संघर्ष करते रहे। शरद जोशी अपना मंतव्य स्पष्ट करते हुए वे कहते है कि **"नया परिवेश, नए अंतर्विरोध, नई दृष्टि की माँग करते है,"** नयी टेक्नोलॉजी, नए विचार, नए अंतर्राष्ट्रीय षडयंत्र, राजनीति में बदलती प्रवृत्तियाँ, वैचारिक अन्तर्धारा को समझना, नई पीढ़ी में जो भाषा की समझ आ गई है। उसे समझकर लिखना ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों को एक साथ जोड़कर सामाजिक विचाराधारा को एक मंच पर लाया जा सके। सन् 1941 से लेकर 1990 तक भारतीय राजनीति से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की मूल्यहीन प्रवृत्ति के प्रति शरद जोशी जी ने अपनी लेखनी चलाई है। उन्होंने अपने व्यंग्य वाण से ब्रह्मण्ड तक को नहीं छोड़ा है। शरदर जोशी जी को जहाँ भी राजनीतिक–सामाजिक विसंगतियाँ दिखी वहाँ उस विसंगतियों को अपने व्यंग्य प्रहार के जरिये अभिव्यक्त किये है और अपनी तीसरी नजर से भ्रष्ट राजनीति को हमेशा अभिव्यक्त करने की चेष्टा करते रहते है। इस प्रकार उन्होंने अपने लेखन के जरिये समाज में व्याप्त अन्यायों का डटकर विरोध किया। उन भ्रष्टाचारी शक्तियों का नीडर होकर इटकर सामना किया, जो देश को गर्त में ले जाने की कोशिश कर रही थी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. सरकार का जादू – शरद जोशी, राजपाल एण्ड सन्स प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2008
2. मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं – शरद जोशी, ज्ञान भारती नई दिल्ली, संस्करण 1983
3. यथा सम्भव – शरद जोशी भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2009
4. नावक के तीर – शरद जोशी, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2010
5. जीप पर सवार इलियाँ – शरद जोशी, राजपाल एण्ड सन्स प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2011
6. अंधो का हाथी – शरद जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1979
7. एक मिनी भ्रष्टाचार – यथासम्भव, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली संस्करण 2009
8. हिन्दी गध लेखन में व्यंग्य और विचार – डॉ0 सुरेशकान्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2004